आर्थिक सर्वेक्षण 2021-22

प्रेस विज्ञप्ति

राज्य सरकार इस बार सोलहवां आर्थिक सर्वेक्षण (2021-22) प्रस्तुत कर रही है। सर्वेक्षण में तेरह अध्याय हैं - बिहार की अर्थव्यवस्था : एक अवलोकन, राजकीय वित्तव्यवस्था, कृषि एवं सहवर्ती क्षेत्र, उद्यमिता क्षेत्र, श्रम, राजगार एवं कौशल, अधिसंरचना एवं संचार, ऊर्जा क्षेत्र, ग्रामीण विकास, नगर विकास, बैंकिंग एवं सहवर्ती क्षेत्र, मानव विकास, बाल विकास तथा पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन। हर अध्याय की मुख्य बातें इस प्रकार हैं :

लॉकडाउन के प्रभाव के कारण बिहार का सकल राज्य घरेलू उत्पाद 2020-21 में मात्र 2.5 प्रतिशत बढ़ा। लेकिन यह प्रदर्शन राष्ट्रीय औसत से बेहतर है क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था 2020-21 में वस्तुतः 7.5 प्रतिशत सिकुड़ गई। वर्तमान मूल्य पर बिहार की प्रति व्यक्ति आय 2020-21 में 50,555 रु. थी जबकि भारत की 86,659 रु. थी। गत पांच वर्षों में (2016-17 से 2020-21 तक) बिहार में प्राथमिक क्षेत्र 2.3 प्रतिशत, द्वितीयक क्षेत्र 4.8 प्रतिशत और तृतीयक क्षेत्र सर्वाधिक 8.5 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ा।

जहां तक राज्य की वित्तव्यवस्था की बात है, तो कोविड-19 महामारी के कारण 2020-21 कठिनाइयों वाला वर्ष था। राज्य सरकार ने इस चुनौती का जवाब अपने वित्तीय संसाधनों के सर्वोत्तम संभव उपयोग के जरिए दिया। वर्ष 2020-21 में राज्य सरकार का कुल व्यय गत वर्ष की अपेक्षा 13.4 प्रतिशत बढ़कर 1,65,696 करोड़ रु. पहुंच गया। इसमें से 26,203 करोड़ रु. पूंजीगत व्यय था और 1,39,493 करोड़ रु. राजस्व व्यय। वर्ष 2020-21 में सामान्य सेवाओं, सामाजिक सेवाओं और आर्थिक सेवाओं पर राज्य सरकार का व्यय गत वर्ष से क्रमशः 11.1 प्रतिशत, 10.4 प्रतिशत और 10.8 प्रतिशत बढ़ा। वर्ष 2020-21 में राज्य सरकार का राजस्व व्यय 1,28,168 करोड़ रु. और पूंजीगत व्यय 36,735 करोड़ रु. था। वहीं, 2020-21 में राज्य सरकार का अपने कर और करेतर स्रोतों से राजस्व 2019-20 के 33,858 करोड़ रु. से बढ़कर 36,543 करोड़ रु. हो गया।

बिहार की अर्थव्यस्था में कृषि का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। बिहार में कृषि एवं सहवर्ती क्षेत्रों का लगातार विकास हुआ है। वर्ष 2019-20 में सकल शस्य क्षेत्र (जीसीए) 72.97 लाख हेक्टेयर था और फसल सघनता 1.44 प्रतिशत थी। गत पांच वर्षों में कृषि एवं सहवर्ती क्षेत्र 2.1 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ा। उप-क्षेत्रों के बीच पशुधन एवं मत्स्यपालन की वृद्धि दर क्रमशः 10 प्रतिशत और 7 प्रतिशत रही है। वर्ष 2020-21 में कुल खाद्यान्न उत्पादन रिकॉर्ड 17.95 लाख टन होने का अनुमान है। वर्ष 2020-21 में 6.83 लाख टन मछली का उत्पादन होने से राज्य मछली उत्पादन में लगभग आत्मनिर्भर हो गया है। बिहार में दूध का कुल उत्पादन 2020-21 में 115.01 लाख टन था। कृषि क्षेत्र के और अधिक विकास के लिए कृषि विभाग द्वारा एन नया मोबाइल ऍप 'बिहान' शुरू किया गया है जो कृषि संबंधी विभिन्न डिजिटल उपयोगों को एक ही प्लेटफॉर्म पर ला देता है।

बिहार में हाल के वर्षों में आशाजनक औद्योगिक विकास हुआ है। बिहार में औद्योगिक निवेश आकर्षित करने के लिए राज्य सरकार ने अनेक नीतिगत उपाय किए हैं और समर्पित संस्थानों की स्थापना की है। इन पहलकदमियों के कारण 2017 से 2021 के बीच राज्य को कुल 54,761 करोड़ रु. निवेश के 1918 प्रस्ताव प्राप्त हुए हैं। तीन सर्वाधिक आकर्षक उद्योग इथेनॉल, खाद्य प्रसंस्करण और नवीकरणीय ऊर्जा हैं। दिसंबर 2021 तक ईथेनॉल क्षेत्र में कुल 32,454 करोड़ रु. निवेश वाली 159 इकाइयों को प्रथम स्तर की अनापत्ति दी गई। ईथेनॉल के उत्पादन को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार ने ईथेनॉल उत्पादन प्रोत्साहन नीति 2021 सूत्रबद्ध की है। राज्य में चिकित्सा संबंधी प्रयोजनों के लिए ऑक्सीजन के उत्पादन में तेजी लाने के लिए राज्य सरकार ने ऑक्सीजन प्रोत्साहन नीति 2021 भी लागू की है।

राज्य में कामकाजी उम्र वाले लोगों की बड़ी संख्या और उनमें से अधिकांश को कृषि सहित अनौपचारिक क्षेत्र में लगा देखते हुए राज्य सरकार ने अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा करने और श्रमिकों की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न योजनाओं की शुरुआत की है। इन योजनाओं के लाभार्थी प्रवासी मजदूर, बाल मजदूर, और निर्माण मजदूर हैं। जैसे, बिहार भवन एवं अन्य सन्निर्माण श्रमिक (रोजगार और सेवा की स्थिति का नियमन) नियमावली 2015 के तहत 2016-17 से 2020-21 तक कुल मिलाकर 4.28 लाख मजदूर निर्बंधित हुए हैं। वर्ष 2020-21 में राज्य सरकार ने 11.10 लाख निर्माण मजदूरों को कुल 538 करोड़ रु. की वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई है। इसके अलावा, विभिन्न आयोगों के जरिए भी राज्य सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्रों में रोजगार के अवसर पैदा किए हैं। वर्ष 2020-21 में बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) ने 4586 रिक्तियों के लिए विज्ञापन दिया था जो गत चार वर्षों में सर्वाधिक था।

परिवहन विभाग ने नागरिक-हितैषी सेवाओं, पथ सुरक्षा आदि में सुधार लाने के लिए हाल के वर्षों में अनेक पहल किए हैं और 2018 से 2020 तक के तीन वर्षों के अंदर पांच राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त किए हैं। गत दशक (2011-20) के दौरान देश में परिवहन, भंडारण एवं संचार क्षेत्र में सर्वाधिक 14.4 प्रतिशत वृद्धि दर बिहार में दर्ज हुई। यह सड़क एवं पुल क्षेत्र में गत 15 वर्षों के दौरान किए गए उच्च सार्वजनिक निवेश का परिणाम है। प्रति 1000 वर्ग किमी क्षेत्रफल पर सड़कों की लंबाई के मामले में केरल (6617 किमी) और पश्चिम बंगाल (3708 किमी) के बाद बिहार (3086 किमी) का ही स्थान है। राज्य में ग्रामीण सड़क नेटवर्क 2015 के 57,388 किमी से बढ़कर 2021 में 1,02,306 किमी हो गया है। अत्याधुनिक भवनों के निर्माण के लिए भवन निर्माण विभाग का बजट 2008-09 के 260 करोड़ रु. से 20-गुने से भी अधिक बढ़कर 2020-21 में 5321 करोड़ रु. हो गया। साथ ही, राज्य की अर्थव्यवस्था सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी अधिसंरचना के तेज विकास के जरिए मजबूत हुई है।

बिहार ने जिन क्षेत्रों में काफी प्रगति की है, उनमें से एक ऊर्जा क्षेत्र भी है। राज्य में ऊर्जा की प्रति व्यक्ति खपत 2014-15 के 203 किलोवाट आवर से बढ़कर 2020-21 में 350 किवा आवर हो गई है जो छः वर्षों में 72.4 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाती है। चरम मांग की पूर्ति लगभग 109.5 प्रतिशत बढ़ी और 2014-15 के 2831 मेगावाट से 2020-21 में 5932 मेगावाट पहुंच गई। राज्य में बिजली की कुल खपत 2016-17 में 21.6 अरब यूनिट थी जो 2020-21 में बढ़कर 31.4 अरब यूनिट हो गई। इसका अर्थ चार वर्षों में 45 प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि है। वर्ष 2019-20 में राज्य में उपलब्ध विद्युत उत्पादन क्षमता 6073 मेगावाट थी जो 2020-21 में 5.7 प्रतिशत बढ़कर 6422 मेगावाट हो गई। बिजली की बढ़ी मांग पूरी करने के लिए राज्य सरकार की 2023-24 तक विभिन्न स्रोतों से चरणबद्ध ढंग से 6607 मेगावाट अतिरिक्त क्षमता जोड़ने की योजना है।

राज्य सरकार ग्रामीण आबादी की विकास संबंधी जरूरतें पूरी करने के लिए अनेक कार्यक्रमों का क्रियान्वयन करती है। जीविका उनमें से एक है जो ग्रामीण लोगों की जीविका संबंधी जरूरतों पर काम करती है। अभी 12.72 लाख से भी अधिक स्वयं सहायता समूहों का बैंकों के साथ ऋण-संपर्क है और अभी तक 16,537 करोड़ रु. की लेनदेन की गई है। वित्तीय समावेश योजना के तहत जीविका ने 11 लाख से भी अधिक स्वयं सेवा समूहों को कम खर्च में बीमा आच्छादन का संपर्क उपलब्ध कराया है। ग्रामीण परिवारों की आमदनी बढ़ाने के लिहाज से रोजगार पैदा करने के लिए मनरेगा का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन किया जा रहा है। रोजगार पाने वाले परिवारों की संख्या 2016-17 के 22.9 लाख से 132.2 प्रतिशत बढ़कर 2020-21 में 51.0 लाख हो गई। स्वच्छ गांव समृद्ध गांव एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है जिसका लक्ष्य सभी गांवों में सौर प्रकाश व्यवस्था स्थापित करना है। इसका क्रियान्वयन 2000 करोड़ रु. के व्यय से किया जा रहा है। ग्रामीण आबादी की मदद के लिए एक और कल्याणमूलक कार्यक्रम जन वितरण प्रणाली है जो अति गरीब परिवारों पर विशेष फोकस के साथ खाद्य सुरक्षा उपलब्ध कराती है। वर्ष 2020-21 में कुल 54,139.2 हजार टन खाद्यान्नों का आबंटन और 51,725.2 हजार टन का उठाव हुआ जो आबंटन का 95.6 प्रतिशत है।

वर्ष 2011 की जनगणना में बिहार में शहरीकरण का स्तर महज 11.3 प्रतिशत था। लेकिन राज्य सरकार द्वारा शहरी केंद्र को पुनर्परिभाषित करने का निर्णय लेने के बाद राज्य में शहरीकरण का वर्तमान स्तर 15.3 प्रतिशत हो गया है जो सराहनीय विस्तार है। राज्य सरकार का नगर विकास पर व्यय 2015-16 में 1648 करोड़ रु. था जो पांच वर्षों में 68 प्रतिशत बढ़कर 2019-20 में 2766 करोड़ रु. हो गया। इसी प्रकार, 2015-16 में आवास पर व्यय 1486 करोड़ रु. था जो इसी अवधि में लगभग चौगुना होकर 2019-20 में 5658 करोड़ रु. पहुंच गया।

बैंकिंग अधिसंरचना राज्य में आर्थिक गतिविधियों के विस्तार के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। बिहार में बैंकिंग क्षेत्र में मुख्यत: सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का वर्चस्व है लेकिन हाल के वर्षों में निजी क्षेत्र के बैंकों की शाखाओं की संख्या भी क्रमश: बढ़ रही है। वर्ष 2020-21 में राज्य में बैंकों की 270 नई शाखाएं शुरू हुईं। सर्वाधिक 115 शाखाएं भारतीय स्टेट बैंक द्वारा खोली गईं और उसके बाद 92 निजी क्षेत्र के बैंकों द्वारा। अन्य राष्ट्रीयकृत बैंकों की 52 शाखाएं खुलीं। बिहार में ऋण-जमा अनुपात 2019-20 के 36.1 प्रतिशत से बढ़कर 2020-21 में 41.2 प्रतिशत हो गया जबकि संपूर्ण भारत के स्तर पर यह 76.5 प्रतिशत से घटकर 71.7 प्रतिशत रह गया। राज्य में वार्षिक ऋण योजना का लक्ष्य 2019-20 के 1,45,000 करोड़ रु. से 6.6 प्रतिशत बढ़कर 2020-21 में 1,54,500 करोड़ रु. हो गया। बैंकों ने बिहार में 2020-21 में 2.51 लाख नए किसान क्रेडिट कार्ड जारी किए जो गत वर्ष से 51.0 प्रतिशत अधिक है। वर्ष 2020-21 में जारी कुल नए कार्डों में से 2.24 लाख कार्ड अकेले व्यावसायिक बैंकों ने जारी किए। राज्य में सभी बैंकों की अनिष्पादित परिसंपत्तियां (एनपीए) मार्च 2020 में कुल अग्रिम का 14.9 प्रतिशत थीं जो मार्च 2021 में घटकर 11.8 प्रतिशत रह गईं।

राज्य में मानव विकास के स्तर का जायजा लेकर राज्य सरकार के समग्र विकासमूलक प्रयासों के बारे में राय बनाई जा सकती है। राज्य सरकार के कुल व्यय में सामाजिक सेवाओं पर व्यय का हिससा 2015-16 में 34.4 प्रतिशत था जो 2020-21 में बढ़कर 44.0 प्रतिशत हो गया। यह 16.6 प्रतिशत की वृद्धि दर दर्शाता है जबकि संपूर्ण भारत के स्तर पर वृद्धि दर 13.8 प्रतिशत है। इस व्यय से लाभान्वित होने वाले दो मुख्य क्षेत्र स्वास्थ्य और शिक्षा हैं। परिणामों पर गौर करने पर दिखता है कि बिहार में शिशु मृत्यु दर 29 मृत्यु प्रति 1000 जीविक प्रसव है जो 30 के राष्ट्रीय आंकड़े से कम है। दिसंबर 2021 तक राज्य में 10.00 करोड़ से भी अधिक व्यक्तियों को टीके लगाए गए। वर्ष 2019-20 में प्राथमिक स्तर पर कुल नामांकन 139.47 करोड़ रु. था जिसमें 68.13 लाख लड़कियां थीं और 71.34 लाख लड़के। वर्ष 2012-13 से 2019-20 के बीच छीजन दर में प्राथमिक स्तर पर 9.0 प्रतिशत अंकों की और उच्च प्राथमिक स्तर पर 7.9 प्रतिशत अंकों की कमी आई।

जब तक बाल विकास से शुरुआत नहीं हो तब तक मानव विकास होना संभव नहीं है। गत सात वर्षों के दौरान बिहार में बाल विकास पर व्यय में लगातार वृद्धि हुई है। वर्ष 2013-14 से 2019-20 के बीच बच्चों पर समग्र व्यय 22.7 प्रतिशत की वार्षिक दर से बढ़ा है। राज्य की शैक्षिक अधिसंरचना के अंदर कार्यशील पेयजल सुविधा और शौचालयों का सभी प्रकार के विद्यालयों में 90 प्रतिशत से अधिक आच्छादन रहा है। विभिन्न हस्तक्षेपों के जरिए 2020-21 में राज्य में 6 से 13 वर्ष उम्र के कुल 1.12 लाख विद्यालय से बाहर हो गए बच्चों (ओओओसी) को मुख्य धारा में लाया गया। इनमें से 0.54 लाख लड़कियां थीं और 0.58 लाख लड़के थे। ऐसा दिखता है कि विद्यालय से बाहर रहे बच्चों की संख्या 2019-20 में 1.44 लाख थी जो 2020-21 में घटकर 1.12 रह गई।

कोविड-19 के संकट ने विकास और पर्यावरण संबंधी चिंताओं के आपसी संबंध को और अधिक फोकस में ला दिया है। पर्यावरण की सुस्थिरता को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रम चलाए गए हैं। जल-जीवन-हरियाली मिशन के तहत 2020-21 में लगभग 3.92 करोड़ पौधे लगाए गए और करीब 4436 हेक्टेयर वन क्षेत्र का मृदा और नमी संरक्षण कार्य के तहत उपचार किया गया। वर्ष 2020-21 में पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग का कुल व्यय 694 करोड़ रु. था। बिहार में 2020 में कुल 1385 मिमी वर्षा हुई जो वर्षापात के दीर्घकालिक औसत से लगभग 37 प्रतिशत अधिक है। समुदाय को 20 किमी क्षेत्र में बिजली गिरने की घटना की कम से कम 40 मिनट पहले चेतावनी दे देने के लिए इंद्रवज्र नामक मोबाइल ऍप का विकास किया गया है।